REACH Lilly MDR-TB Partnership

Media Fellowship Programme

2010-11 FELLOW: BABA MAYARAM

***Baba Mayaram** is a freelance journalist and independent researcher based in Pipariya in Hoshangabad district in Madhya Pradesh. He writes mainly about environmental & developmental issues. He is a member of the Lokniti Network of the Centre for the Study of Developing Societies at New Delhi.*

पहाड़ की बेटी पर टूटा दुखों का पहाड़, पर अब भी वह अच्छे जीवनसाथी का सपना देखती है...

बाबा मायाराम

'यहां मोर कोइ पुसैया नइया हे। कहां जाऊं, का करूं, समझ नइ आत हे। जब मोला बहुत कमजोरी लगत हे। सांस बढ़ जात हे तब रात-रात भर सो नइ सकव। खाट पर बइठे-बइठे रात काटत हों। दीदी मन कते रहत हों, ओ मन कतका दिन राखही, कौन जानी ?' यह कहना है चांदनी (बदला हुआ नाम) का। वह एचआईवी पॉजीटिव है।

चांदनी (बदला हुआ नाम) छत्तीसगढ़ के सुदूर अंचल के एक गांव में रहती है। यह उसका नहीं, उसकी दीदी का गांव है। बिलासपुर जिले के कोटा विकासखंड का एक छोटा सा गांव है वह। यहां पहुंचना सड़क मार्ग से थोड़ा मुश्किल है। हरे-भरे जंगल और खेतों के बीच से सड़क का खूबसूरत रास्ता है। हमें बिलासपुर से गांव तक पहुंचने में दो घंटे से ज्यादा लगे। सड़क अच्छी नहीं है। कुछ दूर तो कच्चा रास्ता है, कीचड़ है। आखिर में हमें गांव से आधा किलोमीटर दूर जीप खड़ी करके पैदल ही जाना पड़ा। हालांकि ट्रेन से यहां पहुंचना ज्यादा आसान है। कटनी-बिलासपुर रेलमार्ग पर छोटा सा रेलवे स्टेशन है खोंगसरा। पास ही है यह गांव।

मैकल पर्वत की गोद में बसे इस गांव में चांदनी (बदला हुआ नाम) नाम की युवती रहती है, जो जवानी (उम्र-25 वर्ष) में ही बुढ़ापे जैसी बीमारियों से जूझ रही है। वह ज्यादा देर पैदल चल नहीं सकती। मेहनत का काम नहीं कर सकती। उसे एक साथ कई बीमारियों ने घेर लिया है। पहले एच.आई.वी, फिर टी.बी. और अस्थमा। वह बहुत कमजोर हो गई है। बीमारियों के साथ-साथ उसे अपनी अत्यंत गरीबी, अकेलापन और समाज के उपेक्षित रवैये ने भी गहरी पीड़ा पहुंचाई है जिसे वह सहन नहीं कर पा रही है।

विशेष रिपोर्ट

चांदनी के मां-बाप का गांव है बेलगहना के पास। जब वह 7 साल की थी तब उसकी मां चल बसी। जवान हुई तो हाथ पीले कर दिए। शादी हो गई। ससुराल चेतमा पाली-कटघोरा में है। पति ड्रायवर था। ट्रक चलाता था। पाली से बिलासपुर कोयले की ट्रक चलाता था। शादी के बाद कुछ दिन अच्छे से गुजरे। फिर बुरे दिन शुरू हो गए।

जल्द ही पता चल गया कि उसका पति बीमार है। उसे बुखार रहता, ट्टी-उल्टी होती, गुसांग में सूजन रहती, मवाद निकलता। बिस्तर पकड़ लिया। गांव में झोला छाप डॉक्टरों का इलाज चला। कुछ दिन आराम रहता। फिर ज्यों के त्यों। कोई असर नहीं।

इस बीच चांदनी गर्भवती हो गई। इधर बच्चे का जन्म दिया। उधर पति की तबियत बिगड़ी और अंतत: वह मर गया। बच्चा भी जन्म से बीमार था। उसका बिलासपुर में इलाज करवाया। भर्ती किया। पर बच न सका। 2 माह का होकर वह भी चल बसा। उसी समय मायके से खबर आई कि पिता नहीं रहे। चांदनी पर दुखों का पहाड़ टूट पड़ा।

वह खुद बीमार रहने लगी। सूखकर लकड़ी जैसी हो गई। उधर ससुराल वालों ने उसकी देखभाल करने की बजाय उसे प्रताड़ित किया। उसका इलाज कराना तो दूर उसे घर से निकाल दिया। इस बीच उसकी तबियत बिगड़ती गई। वह घबराकर मदद के लिए अपनी बहन के पास पहुंची। छोटी बहन की हालत देखकर बड़ी बहन द्रवित हो गई। बहन-बहनोई इलाज के लिए गनियारी अस्पताल लेकर आए।

बिलासपुर जिले के एक छोटे कस्बे गनियारी में जन स्वास्थ्य सहयोग केन्द्र है। यह गैर सरकारी संस्था स्वास्थ्य के क्षेत्र में पिछले 10 साल से काम कर रही है। यहां 35 बिस्तर का अस्पताल है। इसके अलावा, 55 गांव में सामुदायिक स्वास्थ्य कार्यक्रम चलाया जा रहा है। अस्पताल में लोग आकर इलाज कराते हैं। सामुदायिक स्वास्थ्य कार्यक्रम के तहत् गांवों में ही प्राथमिक स्वास्थ्य सुविधाएं उपलब्ध कराई जाती है।

चांदनी की गंभीर हालत को देखकर उसकी कई तरह की जांच कराई गईं। वह एच.आई.वी. पॉजीटिव निकली। डॉक्टरों ने बताया कि यह बीमारी चांदनी को अपने पति से मिली है। वह एड्स से पीड़ित था। चूंकि एच आई वी वायरस शरीर के प्रतिरक्षा तंत्र को नुकसान पहुंचाता है। इसलिए टी. बी., निमोनिया जैसी संक्रामक बीमारियां हो जाती हैं। चांदनी भी टी.बी. और निमोनिया से त्रस्त हुई।

चांदनी की हालत ठीक नहीं थी। दवाओं से कुछ सुधरती पर फिर बिगड़ जाती। इसका अंदाजा समय-समय पर लिए उसके वजन से भी लगता है। जुलाई, 2006 में उसका वजन 39 किलोग्राम था। अगले महीने अगस्त, 2006 में घटकर 33.7 किलो रह गया। यह वह समय था जब वह बहुत कमजोर थी। **(बाकी पेज 5 पर)**

" 'Sometimes I feel that maybe I will not live much longer. This pain never allows me to walk. I can't even sit, it is very painful'. Kalabai is 22 years old and weights 35 kgs. She used to work with her husband and in monsoon-time they earned around 100-150 rupees together. But that has changed now. Kalabai is suffering from TB of the spine. Her family members however say that she is not a victim of any kind of disease but is just doing 'drama'. She is now at her maternal home in Aurapani since nobody in her husband's home can take care of her."

10 years REACH in the fight against TB

SPEAK UP TO STOP TB

THE Lilly MDR-TB PARTNERSHIP